उच्च शिक्षित कार्यशील महिलाएं : सामाजिक जीवन पर आधुनिकीकरण का प्रभाव, प्रयागराज जनपद के परिप्रेक्ष्य में

–प्रगति शुक्ला एवं डॉ. योगेन्द्र प्रसाद त्रिपाठी*
शोधछात्रा– समाजशास्त्र
डॉ. रा.म.लो. अवध विश्वविद्यालय अयोध्या
***शोध पर्यवेक्षक**
प्रोफेसर : समाजशास्त्र विभाग
का.सु. साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या

सारांश

सामाजिक जीवन में निश्चय ही महिलाओं के ऊपर पड़ रहे आधुनिकीकरण के प्रभाव को नजरंदाज नहीं किया जा सकता है। आज विश्व ही नहीं अपितु भारत में भी विकास की प्रक्रिया में महिलाओं का योगदान पुरुषों से कम नहीं है। हाल ही में सांख्यिकी मंत्रालय की ओर से रोजगार पर रिपोर्ट 'आवधिक श्रमबल सर्वेक्षण रिपोर्ट 2017-18' जारी की गई है जिसमें बताया गया कि शहरों में कुल 52.1% महिलाएं और 45.7% पुरुष कामकाजी हैं। जैसा कि **डा. कुमुद रंजन** ने अपनी पुस्तक '**विमेन इन माडर्न आक्यूपेशन इन इण्डिया'** में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि महिलाओं का परंपरागत स्वरूप परिवर्तित हो रहा है। वे धीरे-2 व्यावसायिक क्षेत्र में प्रवेश कर रही हैं । पुरुषों की तरह व्यवसाय में देखी जा रही हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि प्रयागराज जनपद की उच्च शिक्षित कार्यशील महिलाओं में आधुनिकीकरण की स्पष्ट छाप दृष्टिगत होती है। आज आधुनिकीकरण के प्रभाव ने ही सामाजिक जीवन की रूपरेखा को बदलकर रख दिया है। प्रस्तुत लेख में उच्च शिक्षित कार्यशील महिलाओं के सामाजिक जीवन पर आधुनिकीकरण का प्रभाव प्रयागराज जनपद के परिप्रेक्ष्य में बताया गया है।

मूल शब्द:-

उच्च शिक्षित कार्यशील महिलाएं, आधुनिकीकरण, सामाजिक जीवन

प्रस्तावना:-

उच्च शिक्षित कार्यशील महिलाएं, यह शब्द ही महिला श्रमशक्ति को समाज में उच्च श्रेणी दिलाती है। इनके सामाजिक जीवन में आधुनिकीकरण के प्रभाव को प्रयागराज जनपद में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। आधुनिकीकरण ने न केवल सामाजिक जीवन बल्कि आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षिक जीवन पर भी भारी प्रभाव डाला जिसमें पहले की तुलना में परिवर्तन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। उच्च शिक्षित की बात की जाए तो यह सामान्य रूप से सभी को दी जाने वाली शिक्षा से है

जो किसी विशेष विषय से सम्बन्धित है। मानसिक गतिशीलता को आधुनिकीकरण की प्रमुख विशेषता मना जाता है ।[1]

हाल ही में जारी ऑल इण्डिया सर्वे ऑन हायर एजुकेशन 2018-19 की रिपोर्ट से ज्ञात होता है कि भारत में उच्च शिक्षा में छात्रों के नामांकन का अनुमानित आंकड़ा इस प्रकार है - 3,73,89,388 है जिसमें से लगभग 51.36% पुरुष और 46.64% महिला वर्ग है।

अगर इसी तथ्य को प्राचीनता से जोड़ा जाए तो प्रास्थिति विपरीत नजर आती है। प्राचीन काल में महिलाओं का घर से बाहर निकल कर कार्य करने को हेय दृष्टि से देखा जाता था। महिलाओं को घर की मान-मर्यादा जैसे शब्दों से सम्बोधित किया जाता था परन्तु वर्तमान में स्थिति परिवर्तित हो चुकी है। आज ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं है जहाँ महिलाएं अपना परचम बढ़ चढ़ कर न लहरा रही हों। महिला शक्ति समाज का एक अभिन्न अंग बन चुकी है। कार्यशील महिलाओं का समाज में विशिष्ट स्थान होता है।

बात उच्च शिक्षित कार्यशील महिलाओं की की जाए तो वे अपनी नवोन्मेषी तथा वैज्ञानिक विचारधारा से समाज में अपना चहुमुखी विकास कर रही हैं जिससे समाज में इनकी स्थिति में सुदृढ़ता आ रही है। 'कोविड 19' जैसी महामारी के दौर में भी महिलाओं ने अपने कार्यस्थल पर बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। निश्चय ही समाज में हो रहे परिवर्तन की बात की जाए तो उच्च शिक्षित कार्यशील महिलाओं की भूमिका अहम है।[2]

आधुनिकीकरण:-

आधुनिकीकरण समाज में होने वाले परिवर्तन को प्रदर्शित करने का कार्य करता है। आधुनिकीकरण एक गतिशील या कह लीजिए निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। Modernization वर्तमान शिक्षा कार्यकलापों, स्तरों आदि में हो रहे बदलावों की देन है।

अगर हम समाज या सामाजिक जीवन की बात करें तो परिवर्तन एक बड़ी प्रक्रिया है और आधुनिकीकरण परिवर्तन का ही परिणाम है जिसमें नये विचार, मूल्य, वैज्ञानिकता तथा समाज में स्त्रियों की कार्यशीलता में वृद्धि का मुख्य कारण आधुनिकीकरण ही है। पहले जो स्थिति समाज में कार्यशील महिलाओं की थी वर्तमान में आधुनिकता की लहर ने इसको परिवर्तित कर दिया है।

प्रोफेसर योगेन्द्र सिंह के अनुसार भारतीय समाज की परंपरा का आधुनिकीकरण मुख्य रूप से ब्रिटिश शासन के पश्चिमी शासन का परिणाम रहा है। इसके फलस्वरूप यहाँ की संस्कृति में परिवर्तन हुआ है।[2]

आधुनिकता का अर्थ:-

समाजशास्त्र में आधुनिकता के क्षेत्र की बात की जाए तो आधुनिकीकरण का प्रयोग समतामूलक समाज की स्थापना और जीवन स्तर को ऊपर उठाने के परिप्रेक्ष्य में किया जाता है। आधुनिकीकरण की अवधारणा का सम्बन्ध वैज्ञानिक मूल्यों से है। प्रकार की बात की जाए तो

आधुनिकीकरण कई तरह के होते हैं, जैसे - राजनीतिक आधुनिकीकरण, आर्थिक आधुनिकीकरण, सामाजिक आधुनिकीकरण, शैक्षणिक आधुनिकीकरण आदि।[3] प्रस्तुत लेख में हमने सामाजिक आधुनिकीकरण के परिप्रेक्ष्य में बताने का प्रयास किया है। जैसा कि आइजेनस्टाट ने बताया कि – "आधुनिकीकरण वर्तमान समाज की एक बहुत प्रमुख सामाजिक एवं राजनीतिक विशेषता है"। योगेन्द्र सिंह (1978) आधुनिकीकरण को सांस्कृतिक रूप में स्वीकार करते हैं।[4] डेनियल लर्नर ने अपनी किताब "The Passing of Traditional Society" में आधुनिकीकरण के अन्तर्गत कुछ प्रक्रियाएं बताई हैं, जैसे - (1) नगरीकरण में वृद्धि, (2) आधुनिकता का प्रचार प्रसार, (3) संचार के साधनों में वृद्धि, (4) आर्थिक विकास एवं प्रति व्यक्ति आय में बढ़त।[5] आइजेनस्टाट ने अपनी पुस्तक "Modernization Protest and Change" में कहा कि "आधुनिकीकरण आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा पारिस्थिकीय क्षेत्रों में परिवर्तन है"। आधुनिकीकरण शब्द अंग्रेजी के 'मॉडर्न' शब्द से बना है जो स्वयं लैटिन भाषा के 'मोडो' से बना है जिसका अर्थ प्रचलन अर्थात जो चलन में हो वही आधुनिकीकरण है। इसी शब्द के आधार पर आधुनिकीकरण की उत्पत्ति हुई। इसकी कुछ परिभाषाएं इस प्रकार हैं -

मूरे के अनुसार, "आधुनिकीकरण एक क्रान्तिकारी परिवर्तन है जो परंपरागत समाज को उन्नत और आर्थिक रूप से ज्यादा अच्छा करने एवं राजनैतिक रूप से स्थिर सामाजिक परिवर्तन की ओर ले जाता है"।

एम.एन. श्रीनिवास के अनुसार, "किसी पश्चिमी देश के प्रत्यक्ष-परोक्ष संपर्क के कारण किसी गैर पश्चिमी देश में होने वाले परिवर्तनों के लिए प्रचलित शब्द है आधुनिकीकरण"।[6]

श्यामाचरण दूबे के अनुसार, "आधुनिकीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा पहले से चली आ रही व्यवस्था को तकनीक के माध्यम से उसमें परिवर्तन लाया जाता है"।

आधुनिकीकरण में अनेक विधियाँ हैं, जैसे - योजना विधि, समस्या समाधान विधि, प्रयोग विधि, प्रदर्शन विधि, चर्चा व भाषण विधि आदि। आधुनिकीकरण के कारण की बात की जाए तो उनमें (1) शिक्षा, (2) संचार, (3) राष्ट्रवादी विचारधारा, (4) करिश्माई नेतृत्व आदि प्रमुख हैं।[7]

अब बात अगर उच्च शिक्षित कार्यशील महिलाओं के सामाजिक जीवन पर आधुनिकीकरण के प्रभाव की बात की जाए तो महिलाओं की प्रास्थिति में भारी बदलाव हुआ है। महिलाएं दिन-प्रतिदिन उन्नतशीलता की ओर अग्रसर हो रही हैं। परिवार और विवाह जैसी संस्था ने पहले समाज में महिलाओं को एकांगी व संकुचित जीवन जीने पर मजबूर कर दिया था। परन्तु आधुनिक सोच को लिए हुए वर्तमान ने परिवार व विवाह जैसी संस्था में परिवर्तन कर दिया। आज परिवार के किसी

भी कार्य में महिलाओं की प्रतिभागिता व उनकी राय महत्वपूर्ण स्थान रखती है। पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं की प्राथमिकता नहीं थी, घर का मुखिया प्रमुख था। परन्तु वर्तमान में यह देखा जा रहा है कि उच्च शिक्षित महिलाओं ने परिवार व घर की रूपरेखा बदल कर रख दी है। वर्तमान समय में सामाजिक जीवन पर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। आधुनिकता एक मूल्य है जो इस मूल्य से संचालित हो रहा है वही आधुनिक समाज है।

निष्कर्ष:-

प्रस्तुत लेख में यह बताने का प्रयास किया गया है कि प्रयागराज जनपद के परिप्रेक्ष्य में उच्च शिक्षित महिलाओं के सामाजिक जीवन पर आधुनिकीकरण का प्रभाव निश्चय ही व्यापक रूप से पड़ा है। प्रयागराज जनपद के अध्ययन में यह पाया गया है कि पहले की तुलना में वर्तमान में उच्च शिक्षित महिलाओं के सामाजिक जीवन में आधुनिकीकरण का प्रभाव ही नहीं पड़ा है बल्कि उनके रहन-सहन, वेशभूषा, आचार व्यवहार, पारिवारिक स्थिति व सामाजिक स्थिति में भी परिवर्तन आया है। उनके अन्दर आत्मविश्वास, तार्किक सोच, दूरदर्शिता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण का भी विकास हुआ है जो स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है।

आज जो महिलाएं सामाजिक जगत, शक्ति संरचना में महत्वपूर्ण स्थान रख रही हैं निश्चय ही आधुनिकता की देन है। कार्यशील महिलाओं की स्थिति में निःसंदेह इक्कीसवीं शताब्दी के दौर में भारत में नारी की स्थिति बेहतर हुई है। वर्तमान में ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं है जहाँ महिलाएं अपनी भूमिका का बढ़ चढ़ कर निर्वाह न कर रही हों। वर्तमान में मजदूरी करने से लेकर अंतरिक्ष तक का सफर तय करना यह अपने आप में परिवर्तन को दिखाता है। आज कार्यशील महिलाओं का सामाजिक जीवन दिन-प्रतिदिन सुखद और सम्मानित हो रहा है। आधुनिकीकरण के प्रभाव के कारण उनके व्यक्तिगत संवाद कार्य करने की शैली संवाद और उनकी नवोन्मेषी शोध का हमारे समाज पर व्यापक सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

सुझाव:-

उच्च शिक्षित कार्यशील महिलाओं में विद्यमान प्रतिभा और विकास समाज के लिए अत्यन्त आवश्यक है। परन्तु आधुनिकीकरण के नाम पर एक शिक्षित कार्यरत महिला को समाज में दूषित वातावरण बनाने का कोई अधिकार नहीं है क्योंकि समाज को सुन्दर बनाने में एक नारी का स्थान सर्वोपरि है। वह लक्ष्मी, दुर्गा, सरस्वती के रूप में पूजी जाती है।

भारतीय संस्कृति का सम्मान करते हुए आधुनिकता का प्रभाव पड़ना बुरा नहीं है परन्तु आधुनिकीकरण को पश्चिमीकरण का चोला न पहनाया जाए तो निश्चय ही हम अपनी संस्कृति व सभ्यता का परचम विश्व में लहरा पायेंगे। रिश्तों व परिवार में मिठास रहेगी व मूल्यों, मानदण्डों का ह्रास नहीं होगा और संस्कृत का यह श्लोक बिल्कुल सत्य प्रतीत होता है-

"**नारी अस्य समाजस्य कुशल वास्तुकारा अस्ति**"।

अर्थात् महिलाएं समाज की आदर्श शिल्पकार होती हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

(1) डा. अंजू कुमारी - आधुनिकीकरण के परिप्रेक्ष्य में कामकाजी महिलाओं की स्थिति, WAR 2018:4(1):411-4113

(2) योगेन्द्र सिंह Modernization of Indian Tradition, Thomson Press, New Delhi

(3) सिंह, जे0पी0 - आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, पृ0सं0 438

(4) सिंह, जे0पी0 - आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, पृ0सं0 440

(5) Learner, Daniel – The Passing Away of Traditional Society, Free Press, New York 1958.

(6) Srinivas, M.N. – Social Change in Modern India, Orient Longman Limited, New Delhi, 1977

(7) इंटरनेट से उपलब्ध सूचना